फ़िलिप्पियों

1 सभी अध्यक्ष, सेवक[a] और सहकर्मियों
सहित पौलुस और तिमोथी, जो यीशु
मसीह के सेवक हैं, हम सभी की ओर से
मसीह यीशु में पवित्र लोगों के नाम जो
फ़िलिप्पी में रहते हैं
2 हमारे परमेश्वर पिता और स्वामी यीशु
मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति
मिले।
3 तुम्हारी याद आने पर मैं अपने परमेश्वर
को धन्यवाद देता हूँ। 4 हर प्रार्थना में तुम्हारे
लिए मैं हमेशा खुशी के साथ बिनती करता
हूँ। 5 इसलिए कि सुसमाचार में तुम्हारी
सहभागिता आरम्भ से है, 6 मुझे इस बात का
भरोसा है कि परमेश्वर ने तुम लोगों के बीच
एक अच्छा काम शुरू किया है, वह उसे यीशु
मसीह के दिन तक पूरा करते रहेंगे।
7 क्योंकि तुम मेरे दिल[b] में बस गए हो,
मेरे लिए यह भला है, कि मैं तुम्हारे बारे में
ऐसा सोचूँ, कि मेरी जंजीरों और सुसंदेश का
जवाब और सबूत देने के बारे में तुम सब मेरे
साथ सहभागी हो सकोगे। 8 यीशु मसीह के
स्नेह के साथ मैं तुम्हें किस तरह चाहता हूँ,
सृष्टि के स्वामी इस सच्चाई के गवाह हैं।
9 मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा प्रेम,
ज्ञान और समझदारी[c] ज़्यादा उमड़ सकें।
10 तुम मसीह के दिन तक ईमानदार रहो और
ठोकर का कारण न बनो तथा तुम उन बातों
को प्रिय जानो, जो सर्वोत्तम हैं। 11 मसीह यीशु
के द्वारा उत्पन्न होने वाले खरेपन की फ़सल
से लद जाओ, जो परमेश्वर की स्तुति और
प्रशंसा के लिए होते हैं।
12 भाईयो-बहनो, मैं चाहता हूँ कि तुम
समझो कि जो कुछ मेरे ऊपर बीता, उन सब
से सुसमाचार की बढ़त हुयी है। 13 इसके
फलस्वरूप राजमहल के सुरक्षा कर्मियों के
बीच और दूसरे स्थानों में यह प्रगट हुआ
है कि मैं यीशु मसीह के कारण कैदी हूँ।
14 मेरी कैद के कारण साहस पाकर बड़े बल
और बिना डर से अनेक मसीही भाई बहन
परमेश्वर का वचन सुनाते हैं।
15 कुछ लोग ईर्ष्या से प्रेरित होकर संदेश
देते हैं, किन्तु कुछ अच्छे मन से। 16 जो लोग
प्रेम से वचन सुनाते हैं, यह जानते हैं कि मैं
सुसमाचार की रक्षा के लिए ठहराया गया हूँ।
17 दूसरे लोग अच्छे उद्देश्य से नहीं लेकिन
स्वार्थी इच्छा से यह सोच कर वचन देते हैं,
कि जेल में मेरे लिए तकलीफ़ें[d] उत्पन्न हों।
18 तो इसका परिणाम क्या है? केवल यह
कि हर तरह से - चाहे बहाने से या सच्चाई से,
मसीह के विषय में बताया जाता है। और मैं
उसी में आनन्दित हूँ और रहूँगा भी।
19 क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझे तुम्हारी
प्रार्थना और यीशु मसीह की आत्मा की मदद
से आज़ादी मिलेगी। 20 हमेशा की तरह आज
भी मैं दिली इच्छा और आशा के साथ कह
सकता हूँ कि मैं किसी बात से न शर्माऊँगा,
परन्तु बड़ी हिम्मत दिखा कर मेरे जीवन से
यीशु मसीह को आदर सम्मान मिलेगा, चाहे
मैं मरूँ या जीऊँ। 21 क्योंकि मेरे लिए जीवित
रहना मसीह और मर जाना फ़ायदेमंद है।
22 लेकिन यदि देह में ज़िन्दा रहने से मुझे मेरी
मेहनत का फल मिलेगा, तो मुझे मालूम नहीं

---

[a] **1.1** देख-भाल करने वाले [b] **1.7** मन [c] **1.9** सब तरह के विवेक सहित [d] **1.17** परेशानी, दुख

कि मैं क्या चुनूँ। 23 मैं इन दोनों के बीच फँसा
हुआ हूँ, मेरे अन्दर यह इच्छा है कि मसीह
के पास रहने के लिए यहाँ से चला जाऊँ,
जो कि कहीं अधिक अच्छा है। 24 परन्तु
मेरा देह में जीवित रहना तुम्हारे लिए ज़्यादा
फ़ायदेमन्द है। 25 मुझे भरोसा है, और इस
वजह मैं जानता हूँ कि मैं जीवित रहूँगा ताकि
तुम्हारी तरक्की और विश्वास में आनन्द
के लिए तुम्हारे साथ बना रहूँ। 26 ताकि, मेरे
तुम्हारे पास दोबारा आने से तुम्हारी खुशी
और बढ़ जाये।

27 ताकि चाहे मैं आऊँ और देखूँ या न
आऊँ, केवल तुम्हारा चाल-चलन मसीह के
महान संदेश के योग्य हो। और यह भी सुन
सकूँ कि तुम एक आत्मा में स्थिर होकर
और एक मन से मिल कर सुसमाचार के
विश्वास के लिए भरपूर कोशिश करते हो।
28 तुम अपनी खिलाफ़त करने वालों से डरते
नहीं हो। यह उनके विनाश का उनके लिए
साफ़ निशान है, लेकिन तुम्हारे लिए उस
मुक्ति का साफ़ चिन्ह है जो परमेश्वर की
ओर से है। 29 मसीह के कारण तुम्हें यह
अनुग्रह दिया गया, कि तुम न केवल उन पर
ईमान[a] लाओ, लेकिन उनकी खातिर दुख भी
उठाओ। 30 तुम खुद को इसी संघर्ष[b] में पाते
हो, जैसा तुमने मुझे करते देखा है और सुनते
हो कि मैं अब भी कर रहा हूँ।

2 इसलिए यदि मसीह में कुछ शान्ति,
प्यार की तसल्ली, पवित्र आत्मा की
सहभागिता, प्यार से भरी कोमल भावना और
दया है, 2 तो एक ही मन, समान प्रेम, एक ही
रवैय्या रखो, जिस से मैं खुशी से भर जाऊँ।
3 अपने नाम के लिए या स्वार्थ की भावना से
कुछ न किया जाए, लेकिन मन की दीनता से
हर एक दूसरों को अपने से अच्छा[c] समझे।
4 हर एक सिर्फ़ अपने फ़ायदे की बातों पर
ध्यान न दे, लेकिन दूसरों के फ़ायदे को भी
देखे।

5 तुम्हारे भीतर वही मन हो, जो मसीह यीशु
में था। 6 हालाँकि यीशु परमेश्वर थे, लेकिन
उस अधिकार के पद से चिपके न रहे, न
ही उस अधिकार का दावा किया। 7 लेकिन
यीशु ने अपनी सारी शान[d] को अलग रख
कर दूसरे मनुष्यों की तरह एक इन्सान बन
कर एक बन्धुआ मजदूर का सा स्थान ले
लिया। 8 पूरी तरह से एक इन्सान के रूप में
आकर, उन्होंने अपने आप को यहाँ तक दीन
किया, कि मरने के लिए तैयार हो गए, यहाँ
तक कि क्रूस पर मौत भी सह ली। 9 इसलिए
परमेश्वर ने यीशु को बहुत ऊँचा किया और
एक नाम दिया जो हर एक नाम से ऊँचा है।
10 ताकि जितने लोग स्वर्ग, पृथ्वी और पृथ्वी
के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम के सामने
घुटना झुकाएँ। 11 परमेश्वर पिता की इज़्ज़त
और बड़ाई के लिए हर एक व्यक्ति यह मान
ले कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं।

12 इसलिए मेरे प्यारो, जैसा तुम हमेशा मेरी
बात मानते आए हो, मेरे हाज़िर रहने में ही
नहीं, लेकिन मेरी गैरहाज़िरी में भी, अधिक
सावधानी बरतते हुए परमेश्वर द्वारा दी गई
मुक्ति के काम को अपने जीवन में दिखने
दो। 13 क्योंकि वह परमेश्वर ही हैं जिन की
शक्ति तुम्हारे भीतर उनकी भली इच्छा और
कामों को प्रोत्साहित करती है।

14 बिना वादविवाद और शिकायत[e] के
हर काम को किया करो। 15 ताकि तुम दुष्ट
और भ्रष्ट पीढ़ी में परमेश्वर के निर्दोष और
ईमानदार सन्तान बने रहो और जीवन के
वचन[f] को थाम कर इस संसार में रोशनी के

[a] **1.29** विश्वास [b] **1.30** कश्मकश [c] **2.3** उत्तम [d] **2.7** महिमा [e] **2.14** कुड़कुड़ाहट [f] **2.15** संदेश

समान चमको। 16 तब मैं मसीह के वापस
लौटने के दिन में खुश हो सकूँगा, कि मैं न
तो बेकार में दौड़ा था या मेहनत की थी।
17 हाँ, यहाँ तक कि यदि मैं अर्घ[a] के रूप में
तुम्हारे विश्वास से उत्पन्न होने वाली सेवा
और बलिदान पर उण्डेल भी दिया जाऊँ,
तो मैं तुम्हारे साथ आनन्दित होऊँगा। 18 इस
कारणवश तुम्हें भी खुश होना चाहिए और मेरे
साथ आनन्द मनाना चाहिए।

19 लेकिन मैं यीशु मसीह पर भरोसा रखता
हूँ कि मैं तिमोथी को तुम्हारे पास जल्दी
भेजूँगा, जिस से मैं तुम्हारे बारे में जान कर
शान्ति प्राप्त करूँ। 20 क्योंकि मेरे पास उसे
छोड़कर समान सोच वाला और कोई नहीं,
जो ईमानदारी से तुम्हारे बारे में सोचता हो।
21 इसलिए कि हर एक जन यीशु के काम के
बारे में नहीं, अपने फ़ायदे[b] की बात सोचता
है। 22 लेकिन तुम उसके विश्वसनीय बर्ताव
को जैसा बेटे का पिता के साथ होता है,
जानते हो कि उसने सुसमाचार फैलाने में मेरी
सेवा की है। 23 इसलिए जैसे ही मुझे अपने
बारे में मालूम हो जाता है, मैं उसे जल्दी
भेजना चाहूँगा। 24 लेकिन मुझे यीशु में भरोसा
है, कि मैं खुद बहुत जल्दी आऊँगा।

25 मैंने यह ज़रूरी समझा है कि इपफ्रुदितुस
को तुम्हारे पास भेजूँ जो काम में मेरा भाई,
साथी, फ़ौजी, तुम्हारा संदेशवाहक और मेरी
ज़रूरतों को पूरा करने वाला है। 26 उसका
मन भारी था और वह तुम सब को देखने की
कामना करता था तुमने उसकी बीमारी का
हाल सुना ही था। 27 बेशक बीमारी के कारण
वह मरने पर था। लेकिन परमेश्वर ने उस पर
दया की। न केवल उस पर लेकिन मुझ पर
भी, ताकि मुझे बार-बार दुःख न सहना पड़े।
28 इसलिए मैंने उसे बड़ी तत्परता से भेजा,
ताकि जब तुम उसे फिर से देखो, तुम खुश
हो और मुझे अधिक दुख न हो। 29 उसे मसीह
में बड़े आनन्द के साथ कबूल करो और ऐसे
लोगों को इज़्ज़त दो। 30 क्योंकि मसीह के
काम के लिए बिना अपने जीवन की फ़िक्र
किए वह मौत के निकट पहुँच गया था, ताकि
मेरे लिए की जाने वाली तुम्हारी सेवा की
कमी को पूरा कर सके।

3 अन्त में भाईयो-बहनो, यीशु में खुश रहो।
एक ही बात को बार-बार तुम्हें लिखे
जाने में मुझे कोई परेशानी नहीं होती है,
लेकिन तुम्हारे लिए फ़ायदेमन्द है।

2 कुत्तों से सावधान रहो। बुरे काम करने
वालों से सतर्क रहो! काट-कूट करने वालों
से सावधान!

3 हम वे यहूदी[c] हैं जो आत्मा में परमेश्वर
की आराधना करते हैं और मसीह यीशु में
आनन्दित होते हैं और इन्सानी कोशिशों
(धर्म-कर्म)पर भरोसा नहीं करते। 4 हालाँकि
मैं बाहरी रीति-रिवाज़ों[d] में भरोसा करने का
बहाना कर सकता था।

5 मेरा खतना आठवें दिन हुआ था। इस्राएल
के वंश में बेन्जामिन गोत्र का और इब्रियों का
इब्री हूँ। जहाँ तक यहूदी धर्म की बात है, तो
एक फ़रीसी हूँ। 6 जोश की कहें तो मण्डली
को सताने वाला, जहाँ तक नियमशास्त्र के
आधार पर धार्मिकता की बात है, तो निर्दोष।

7 जो कुछ मेरे लाभ का था, उन सब को
मैंने मसीह की खातिर नुकसान समझ लिया।
8 हाँ, मैं सचमुच में अपने प्रभु यीशु मसीह को
जानने के सामने सब कुछ को बेकार समझता
हूँ। जिस के लिए मैंने सब तरह का नुकसान
सह लिया और सब चीज़ों को कूड़ा समझता
हूँ, ताकि मैं मसीह को हासिल कर सकूँ और

[a] **2.17** एक पीने वाली भेंट [b] **2.21** स्वार्थ [c] **3.3** खतना वाले [d] **3.4** शरीर

उन में पाया जाऊँ। 9 नियम शास्त्र को पालन
करने से मिलने वाली मेरी अपनी धार्मिकता
नहीं, लेकिन जो मसीह में विश्वास के कारण
है और जो विश्वास के द्वारा परमेश्वर से
आती है। 10 ताकि मैं उन्हें, उनके जी उठने
की शक्ति और उनकी मौत की समानता
में उनके दुखों की सहभागिता जानूँ। 11 और
किसी तरह से मरे हुओं में से जी उठने के
अनुभव तक पहुँच सकूँ।
12 यह नहीं कि मैंने सब कुछ हासिल कर
लिया है या सिद्ध बनाया जा चुका हूँ। लेकिन
मैं आगे बढ़ता जाता हूँ ताकि मैं वह हासिल
कर सकूँ, जिस के लिए मसीह यीशु ने मेरा
चुनाव किया है। 13 भाईयो-बहनो, मैं यह नहीं
समझता कि मैं यह हासिल कर चुका हूँ।
लेकिन एक काम करता हूँः पुरानी बातों को
भूलकर आगे की बातों की ओर चला जा रहा
हूँ। 14 मैं मसीह यीशु में परमेश्वर की ऊपरी
बुलाहट के ईनाम के लिए निशाने की तरफ़
बढ़ता हूँ।
15 इसलिए हम में जो अच्छी समझदारी
रखते हैं, यही मन रखें। यदि किसी विषय
में तुम्हारा सोचना कुछ और है, तो परमेश्वर
उसे तुम पर प्रगट करेंगे। 16 किसी भी हालत
में, हम ने जिस माप से हासिल किया है, उसी
नियम से हम जीवन जिएँ और एक ही मन के
रहें।
17 भाईयो-बहनो, हम तुम्हारे लिए एक
नमूना हैं इसलिए दूसरों के साथ मिल कर
मेरी तरह जीवन जियो और उन्हें भी देखते
रहो जो ऐसा करते हैं। 18 बहुत से लोग मसीह
के क्रूस के दुश्मन की तरह जीवन जी रहे
हैं। अक्सर मैंने उनके बारे में तुम्हें बताया
है और अभी रोते हुए कहता हूँ। 19 उनका
अन्त बर्बादी है। उनका ईश्वर उनका पेट
है। अपनी शर्मनाक बातों पर उन्हें घमण्ड है।
उनका सारा ध्यान दुनिया की बातों पर लगा
हुआ है। 20 लेकिन हमारी नागरिकता स्वर्ग
की है। वहीं से हमें प्रभु यीशु मसीह के आने
का इन्तज़ार है। 21 वह हमारी नाश होने वाली
देह को बदलेंगे, ताकि यह उनकी तेज भरी
देह के समान हो जाए। ऐसा यीशु अपनी उस
शक्ति से करेंगे, जो उन्हें सब वस्तुओं को
अपने वश में करने के लायक बनाती है।

4 इसलिए मेरे प्यारे भाईयो-बहनो, जिन
में मेरा जी लगा रहता है और जो मेरा
आनन्द और मुकुट हो, यीशु में स्थिर रहो।
2 मैं यूओदियो और सुन्तुखे से यह बिनती
करता हूँ कि वे मसीह में एक मन की बनी
रहें। 3 मेरे सच्चे साथी, मैं यह बिनती करता
हूँ कि तुम इन महिलाओं की मदद करो,
जिन्होंने खुशी का समाचार[a] दिए जाने के
काम में मेरे साथ मेहनत की। जिस प्रकार से
क्लॅमन्ट और दूसरे कार्यकर्ताओं ने भी, जिन
के नाम जीवन की किताब में हैं, मेहनत की
थी। 4 यीशु में सदा खुश रहो, मैं फिर कहता
हूँ, खुश रहा करो। 5 तुम्हारी सज्जनता को
सभी लोग देख सकें। यीशु अचानक आएँगे[b]।
6 किसी भी प्रकार की चिन्ता न किया
करो, लेकिन हर तरह के हालात में तुम्हारी
बिनतियाँ धन्यवाद के साथ परमेश्वर पिता
के सामने लायी जाएँ। 7 तब परमेश्वर पिता
की शान्ति, जिसे समझा नहीं जा सकता,
तुम्हारे दिल[c] और विचारों को मसीह यीशु
में संभालेगी।
8 अन्त में भाईयो-बहनो, जो कुछ सच है,
जिन बातों में ईमानदारी है, इन्साफ़ है, जो
बातें शुद्ध, प्यारी और सुनने में अच्छी हैं,
उन पर ध्यान लगाओ। यदि कोई भली

[a] **4.3** सुसमाचार [b] **4.5** उनका आना नज़दीक है [c] **4.7** हृदय

और तारीफ़ के लायक बात है, उसी पर
मनन करो। 9 जो कुछ तुमने मुझ से सीखा,
अपनाया, सुना और मुझ में देखा है, वही करो
और शान्ति देने वाले परमेश्वर तुम्हारे साथ
रहेंगे।

10 मैं यीशु में बहुत खुश हूँ कि अब तुम मुझ
में फिर से दिलचस्पी दिखाने लगे हो। इसके
पहले तुम्हें मेरा ख्याल तो था लेकिन मौका
नहीं मिला था। 11 यह नहीं कि मैं तुम्हें अपनी
ज़रूरतें बतला रहा हूँ। लेकिन मैंने सीख
लिया है, कि जैसी हालत में हूँ, सन्तोष रखूँ।
12 कमी हो या बहुतायत, दोनों ही अनुभव मेरे
पास हैं। हर जगह और हर बात में मुझे यह
सिखाया गया है, कि भरपेट कैसे रहूँ और
भूख कैसे सहन करूँ। भरपूरी का आनन्द
कैसे लूँ और ज़रूरत न पूरी होने की पीड़ा
को कैसे सहूँ। 13 यीशु जो मुझे शक्ति देते हैं,
उनकी मदद से मैं हर हालत में रह सकता हूँ।

14 फिर मैं खुश हूँ कि तुम मेरी मुसीबत में
हिस्सेदार बने। 15 तुम फ़िलिप्पी की मण्डली
के लोग, तुम्हें यह मालूम है कि सुसमाचार
की शुरूआत में, जब मैं मकिदुनिया छोड़ने
पर था, देने और लेने के बारे में तुम लोगों
को छोड़कर किसी और ने मेरी मदद नहीं
की थी। 16 जब मैं थिस्सुलुनीके में था, तब
भी बार-बार तुमने मेरी ज़रूरतों को पूरा किया
था। 17 मैं यह इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि मैं
सहयोग[a] का भूखा हूँ। मैं यह चाहता हूँ कि
तुम्हारे खाते में बहुतायत से जमा हो। 18 मेरे
पास अधिकाई से सब कुछ है। इपफ्रुदितुस
के हाथ से जो कुछ तुमने भेजा, उसको
पाकर मैं भरा-पूरा हूँ। वे चीजें खुशबूदार
इत्र, परमेश्वर को खुश करने वाली और
ग्रहण योग्य कुर्बानी हैं। 19 मेरे परमेश्वर,
मसीह यीशु अपनी महिमा में धन-सम्पत्ति के
अनुसार ही तुम्हारी ज़रूरतों को पूरा करें।

20 अब हमारे परमेश्वर पिता को बड़ाई
और आदर[b] सदा काल तक मिलता रहे।
ऐसा ज़रूर हो।

21 मसीह के प्रत्येक पवित्र जन और मेरे
साथ जो भाई लोग हैं, वे भी इस में शामिल
हैं। 22 सभी पवित्र लोग तुम सभी को और
विशेष कर कैसर के परिवार के लोगों को
सलाम कहते हैं।

23 स्वामी यीशु मसीह की कृपा तुम सभी
पर बनी रहे। ऐसा ही हो।

---

[a] **4.17** दान [b] **4.20** महिमा

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com